ISSN : 2321-6131

वर्ष : 09 अंक : 17 जनवरी-जून, 2021

समवेत

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)

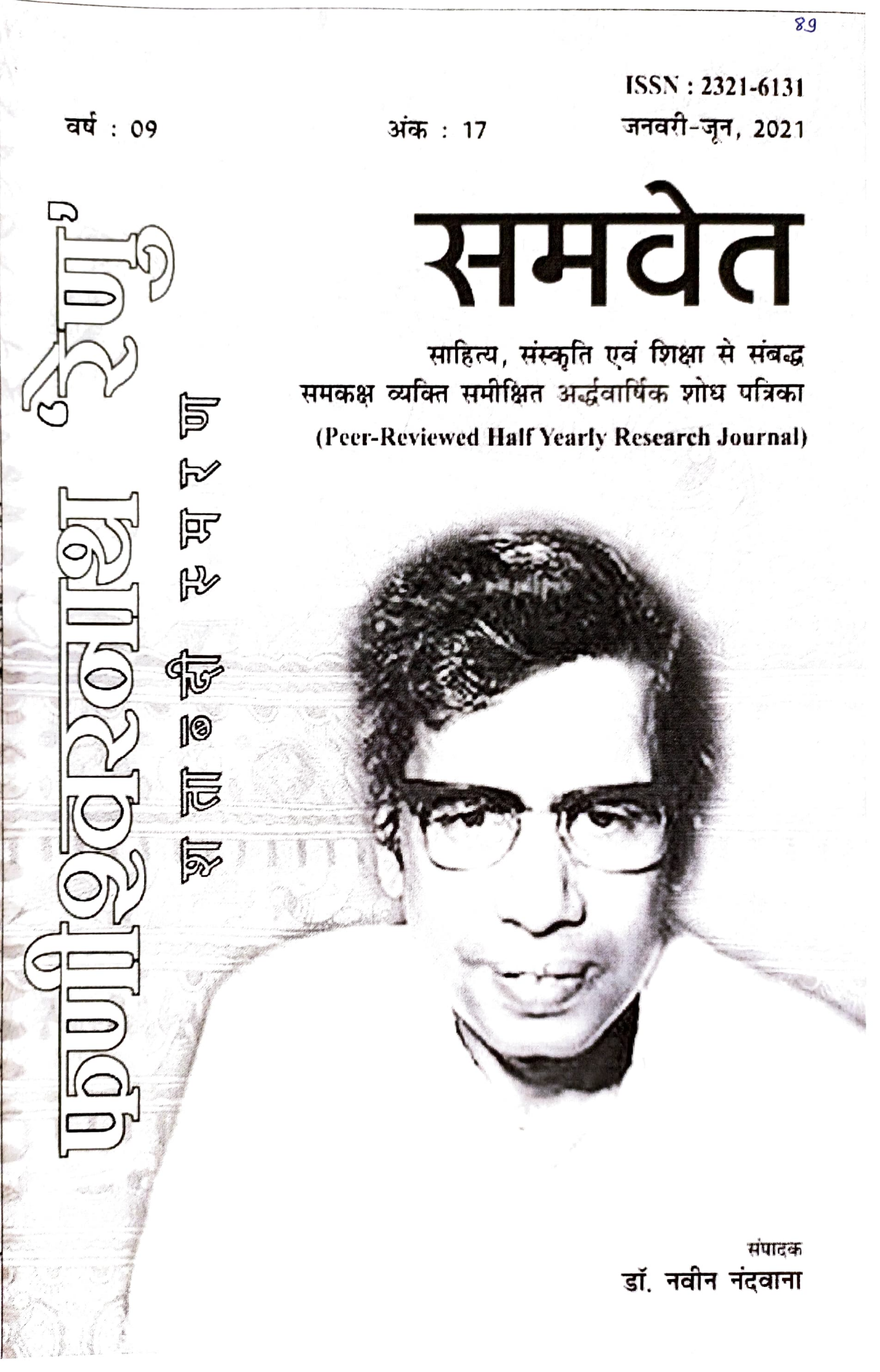

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

N : 2321-6131
: 09 अंक : 17 जनवरी-जून, 2021

समवेत

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

समवेत: ISSN 2321-6131 साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

संपादक :

डॉ. नवीन नंदवाना
सह आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रबंध संपादक :

डॉ. सविता नंदवाना

पत्र-व्यवहार एवं संपर्क :

डॉ. नवीन नन्दवाना
जी-9, ए-ब्लॉक, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर, मनवाखेड़ा, उदयपुर (राज.) - 313003
(मो.) 09828351618, 09462751618
email : editordeskudr@gmail.com

आवरण चित्र :

डॉ. मयंक शर्मा
विख्यात चित्रकार, उदयपुर (राज.)

सदस्यता शुल्क :

व्यक्तिगत : वार्षिक - 500 रुपये,
पंचवार्षिक - 2,000 रुपये
संस्थागत : वार्षिक - 700 रुपये,
पंचवार्षिक - 3,000 रुपये
इस अंक का मूल्य : 300 रुपये

परामर्श एवं संपादक मण्डल :

प्रो. के. के. शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, हिंदी भाषा एवं साहित्य,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ.प्र.)

प्रो. माधव हाड़ा
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मो.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

प्रो. नरेंद्र मिश्र
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयनारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

प्रो. सुनील कुमार द्विवेदी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर बंग विश्वविद्यालय,
राजाराममोहनपुर, दार्जिलिंग (प. बंगाल)

डॉ. सुनील कुलकर्णी
अध्यक्ष, तुलनात्मक भाषा विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर

कृपया सदस्यता राशि नगद/धनादेश/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा **समवेत ध्वनि संस्थान** के नाम भेजें।
बैंक खाता विवरण: ICICI Bank Ltd., MLS University Branch, Udaipur (Raj.)
Account No. : 694 201 701373, IFSC : ICIC0006942

© संपादकाधीन

- संपादन कार्य पूर्णत: अवैतनिक है।
- प्रकाशित रचनाओं के विचार एवं विज्ञापनों से संपादक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- प्रकाशित सामग्री के उपयोग हेतु लेखक-संपादक की अनुमति अनिवार्य है।
- प्रकाशित आलेखों की मौलिकता के लिए सम्बन्धित लेखक उत्तरदायी हैं।
- समस्त विवादों के लिए न्यायालय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रकाशक :

समवेत ध्वनि संस्थान
जी-9, ए-ब्लॉक, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर, मनवाखेड़ा, उदयपुर (राज.) - 313003

मुद्रक :

हिमांशु पब्लिकेशन्स
464, सेक्टर 11, हिरण मगरी, उदयपुर - 313 002 (राज.)
4379/4-B, प्रकाश हाऊस, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई-दिल्ली-2

अनुक्रम

1. फणीश्वरनाथ रेणु : व्यक्ति और सृजन — 7
   डॉ. नवीन नंदवाना
2. आदिम रसगंधों के गायक रेणु — 20
   डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
3. 'मैला आँचल' और आंचलिकता — 32
   डॉ. मनीषा मिश्र
4. 'मैला आँचल' में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ — 41
   सुभाष चंद्र नंदवाना
5. भारतीय गाँवों की यथार्थ तस्वीर : 'परती-परिकथा' — 50
   डॉ. आशीवाणी. के
6. क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता और सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति : 'जुलूस' — 56
   दीपक कुमार
7. नारी-जीवन के अंतर्विरोधों का संसार : 'कलंक मुक्ति' — 67
   डॉ. नीतू परिहार
8. गुलामी के विरुद्ध किशोर युवकों के संघर्ष की बेजोड़ कहानी : 'कितने चौराहे' — 77
   डॉ. आदित्य कुमार गुप्त
9. परिवार की दरकती दीवारें : 'पल्टू बाबू रोड' — 90
   डॉ. लोकेंद्र कुमार
10. रेणु के उपन्यासों में किसान जीवन — 98
    श्रीनिवास त्यागी
11. कथा-प्रयुक्ति का वैकल्पिक संसार : रेणु की कहानियाँ — 110
    डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी
12. रेणु के कथा साहित्य में प्रवाहमान संस्कृति की विरासत : ग्रामीण अंचल — 133
    षैजूके

नारी-जीवन के अंतर्विरोधों का संसार : 'कलंक मुक्ति'

डॉ. नीतू परिहार*

आंचलिक उपन्यासकार के रूप में फणीश्वरनाथ रेणु ख्याति प्राप्त हैं। उनका उपन्यास 'मैला आँचल' आंचलिक उपन्यास के रूप में हिंदी साहित्य में मील का पत्थर है। रेणु लिखते तो निरंतर रहे लेकिन 'मैला आँचल' जैसी प्रसिद्धि किसी अन्य उपन्यास को न मिली। उनका दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' भी सराहा गया। किंतु बाद की रचनाओं में वो प्रभाव नहीं पड़ा है जो पहली दो रचनाओं का पड़ा था। इसमें कोई दो राय नहीं कि रेणु अपने समय, समाज और जीवन का चित्रण करने वाले सजग कथा-शिल्पी थे। वे कथ्य के साथ कथा-कृति की संरचना के प्रति भी बहुत सजग थे। यह सजगता ही उन्हें दोहराव से बचाती है।

प्रेमचंद उपन्यास की 'कथावस्तु' के संदर्भ में वाल्टर बेसेंट की उपन्यास कला पुस्तक को उद्धृत करते हुए लिखते हैं- ''उपन्यासकार को अपनी सामग्री आले पर रखी हुई पुस्तकों से नहीं, उन मनुष्यों के जीवन से लेनी चाहिए, जो उसे नित्य ही चारों तरफ मिलते रहते हैं।''[1] 'कलंक मुक्ति' उपन्यास के कथानक के संदर्भ में यह कथन बहुत उचित प्रतीत होता है। रेणु ने उपन्यास का कथानक अपने आस-पास से लिया है। रेणु के लेखन की यह बहुत बड़ी विशेषता थी कि वे अपनी कथाओं में

---

* सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) 313001

कथानक को, चरित्र को दोहराते नहीं थे। वरना आज के युग में ऐसे बहुत से लेखक मिल जाएँगे जो एक कथ्य को नाम बदल-बदल कर अनेक बार प्रयुक्त करते हैं। एक ही व्याख्यान को बार-बार शीर्षक बदल कर संगोष्ठियों में अपनी विद्वता सिद्ध करते हैं। रेणु के 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' को भी यदि ध्यान से देखा जाए तो दोनों में कही भी कोई समानता नहीं है- न कथ्य के स्तर पर, न ही पात्र और शिल्प के स्तर पर। रेणु का अपार जीवनानुभव उनकी कृतियों में दिखाई देता है। कुछ विद्वानों का तो यह भी मानना है कि गाँव में ऐसा कुछ नहीं बचा, जिसका चित्रण रेणु जी ने अपने उपन्यासों में न किया हो।

फणीश्वरनाथ रेणु पर जो आंचलिक उपन्यासकार का ठप्पा लगा था, उससे मुक्त होने के लिए वे अपनी कथा-भूमि बदलते हैं। अपने चारों लघु उपन्यासों में उन्होंने भिन्न-भिन्न कथानक लिए हैं। उनके लघु उपन्यास हैं- 'पलटूबाबू रोड', 'कलंक मुक्ति', 'जुलूस' और 'कितने चौराहे'। रेणु का संवेदनशील मन इनमें कुछ खास नहीं रमा। अगर इस दृष्टि से देखे तो 'जुलूस' में रेणु जी का मन रमता है।

'कलंक मुक्ति' पहले 'दीर्घतपा' के नाम से प्रकाशित हुआ था। यह 1963 में बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना से प्रकाशित हुआ। बाद में इस उपन्यास का परिवर्द्धित संस्करण हिंद पॉकेट बुक्स, दिल्ली से 1972 में 'कलंक मुक्ति' के नाम से आया। 'कलंक मुक्ति' शीर्षक उपन्यास की कथावस्तु को अभिव्यक्त करता है। इस लघु उपन्यास की कथा 'वर्किंग विमेन्स होस्टल' के इर्द-गिर्द बुनी गई है। आज भी हम अखबारों में विमेन्स होस्टल की तरह-तरह की खबरें पढ़ते हैं, जहाँ नैतिक-अनैतिक कई काम होते हैं। रेणु ने निःसंदेह बहुत प्रासंगिक विषय चुना। उपन्यास की रचना में जो प्रसंग लिया गया था, वह आज भी प्रासंगिक है।

उपन्यास का प्रारंभ रामरति के 'अजीत भाई... अजीत भाई के पुकारने से होता है। रामरति विमेन्स होस्टल में चपरासी मुनिया की बेटी है और अपनी माँ के साथ होस्टल में ही रहती है। रामरति करीब दस साल बाद अजीत भाई से मिली है, वो भी अचानक रास्ते में। इनकी बातचीत से लगता है अजीत भाई लेखक हैं। कुछ इधर-उधर की बाते करने के बाद रामरति, अजीत के पाँव पकड़ लेती है और कहती है- ''आपने हम पर अभियोग लगाकर जिस अवस्था में छोड़ दिया है उसके निस्तार के लिए आपके पैर पकड़ कर प्रार्थना भी कर सकती हूँ- दुहाई! हमें इस कैदखाने से निकालिये आप। कलंक-मुक्त कीजिए हमें।''[12] यहीं से अजीत भाई पुरानी फाइल ढूँढकर उसका अध्ययन करते हैं और पूरी कहानी पूर्व दीप्ति अर्थात् 'फ्लैश बैक' में

उनके मानस मे उभर जाती है। कलंक मुक्ति लघु उपन्यास है किंतु इसका कथानक विस्तृत है। 'वर्किंग-विमेन्स' होस्टल पर कथा केंद्रित होने के कारण मुख्य पात्र स्त्री ही हैं। मुख्य रूप से देखा जाए तो इस उपन्यास के दो स्त्री मुख्य पात्र हैं- बेला गुप्त तथा श्रीमती आनंद। बेला गुप्त वर्किंग-विमेन्स की सुपरिडेण्ट है, साथ ही कई संस्थाओं की 'केयर टेकर' भी है। श्रीमती आनंद अर्थात ज्योत्स्ना या ज्योति तीनों नाम एक ही पात्र के हैं। श्रीमती आनंद, मिस्टर आनंद की पत्नी है। श्रीमती आनंद विमेन्स वेलफेयर बोर्ड की ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। स्वभाव से गुस्सैल और चिड़चिड़ी है। उनका परिचय इन पंक्तियों से व्यक्त हो जाता है। रेणु लिखते हैं- ''श्रीमती आनंद, प्राय: सभी भाषाओं के एकाध अश्लील कहावत, अश्लील शब्द और अश्लील आशय के वाक्य जानती है और अवसर देख कर उसका प्रयोग भी करती है। यों भी, तनिक वल्गर बोले बिना उसके मुँह में लज्जत ही नहीं आती है।'[13] वे गर्ल्स होस्टल की लड़कियों को अपने हिसाब से काम लेना चाहती हैं। अपने घर कोई पार्टी हो तो नाच-गान के लिए हॉस्टल से लड़कियाँ बुलवाना, पति के मित्रों के सामने उनके नाच-गान की प्रस्तुति करवाना उनके लिए बहुत सामान्य बात है। एक शाम जब श्रीमती आनंद की कोठी पर एक छोटी-सी पार्टी थी, तब होस्टल से लड़कियों को लोकगीत गाने के बहाने बुलवाया गया। बेला गुप्त होस्टल वार्डन ने लड़कियों को नहीं भेजा। अपनी इज्जत को बचाते हुए मिस्टर आनंद ने अपने मित्रों से कहा उनकी पत्नी भी अच्छा गाती है। ''मिस्टर आनंद ने अपनी गंजी खोपड़ी पर एक बार हाथ फेर लिया। फिर, इधर-उधर देखकर उसने सूचना दी आप लोगों को शायद यह नहीं मालूम कि ज्योति खुद बढ़िया लोकगीत गा लेती है।'[14]

मिस्टर आनंद अपनी पत्नी को अपने दोस्तों जो कि ऑडिट करने आए हैं उन पर अपना प्रभाव दिखाने के लिए उपयोग करते हैं। श्रीमती आनंद पहले श्रीमती महांती थी। मिस्टर महांती की टिम्बर कंपनी है। अपनी कंपनी को 'झापा-झिलमिलिया' और 'वनखंडी' का ठेका मिल जाए वे इस कोशिश में हैं। ठेका देना, न देना जनरल बहादुर के हाथ में है। उनका ठेका देने की एक शर्त है जैसे उनके दलाल मित्र आनंद ने उन्हें बताया। उसे हम रेणु के शब्दों में ही देखें- ''शराब में भारतीय 'रम' और औरतों में साँवली, मोटी। ब्लेक एण्ड व्हाइट, व्हाइट हार्स, डिम्पल, हेग, ओल्ड स्मग्लर- कुछ नहीं पीता नरबहादुर। देवदुर्लभ इन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की शराबों को वह 'रद्दी ड्रिंक' कहता है। बंगाल, मिथिला और काश्मीर की सुंदरता को देखकर वह 'ठण्डा' हो जाता है। उसे साँवली औरत चाहिए। लड़की नहीं औरत।'[15] ये कथन ठेका मिलने की सच्चाई को बता रहे हैं। एक जरूरत पूरी की जाने पर ठेके की

उनके मानस मे उभर जाती है। कलंक मुक्ति लघु उपन्यास है किंतु इसका कथानक विस्तृत है। 'वर्किंग-विमेन्स' होस्टल पर कथा केंद्रित होने के कारण मुख्य पात्र स्त्री ही हैं। मुख्य रूप से देखा जाए तो इस उपन्यास के दो स्त्री मुख्य पात्र हैं- बेला गुप्त तथा श्रीमती आनंद। बेला गुप्त वर्किंग-विमेन्स की सुपरिडेण्ट है, साथ ही कई संस्थाओं की 'केयर टेकर' भी है। श्रीमती आनंद अर्थात ज्योत्स्ना या ज्योति तीनों नाम एक ही पात्र के हैं। श्रीमती आनंद, मिस्टर आनंद की पत्नी है। श्रीमती आनंद विमेन्स वेलफेयर बोर्ड की ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। स्वभाव से गुस्सैल और चिड़चिड़ी है। उनका परिचय इन पंक्तियों से व्यक्त हो जाता है। रेणु लिखते हैं- ''श्रीमती आनंद, प्राय: सभी भाषाओं के एकाध अश्लील कहावत, अश्लील शब्द और अश्लील आशय के वाक्य जानती है और अवसर देख कर उसका प्रयोग भी करती है। यों भी, तनिक वल्गर बोले बिना उसके मुँह में लज्जत ही नहीं आती है।'[13] वे गर्ल्स होस्टल की लड़कियों को अपने हिसाब से काम लेना चाहती हैं। अपने घर कोई पार्टी हो तो नाच-गान के लिए हॉस्टल से लड़कियाँ बुलवाना, पति के मित्रों के सामने उनके नाच-गान की प्रस्तुति करवाना उनके लिए बहुत सामान्य बात है। एक शाम जब श्रीमती आनंद की कोठी पर एक छोटी-सी पार्टी थी, तब होस्टल से लड़कियों को लोकगीत गाने के बहाने बुलवाया गया। बेला गुप्त होस्टल वार्डन ने लड़कियों को नहीं भेजा। अपनी इज्जत को बचाते हुए मिस्टर आनंद ने अपने मित्रों से कहा उनकी पत्नी भी अच्छा गाती है। ''मिस्टर आनंद ने अपनी गंजी खोपड़ी पर एक बार हाथ फेर लिया। फिर, इधर-उधर देखकर उसने सूचना दी आप लोगों को शायद यह नहीं मालूम कि ज्योति खुद बढ़िया लोकगीत गा लेती है।'[14]

मिस्टर आनंद अपनी पत्नी को अपने दोस्तों जो कि ऑडिट करने आए हैं उन पर अपना प्रभाव दिखाने के लिए उपयोग करते हैं। श्रीमती आनंद पहले श्रीमती महांती थी। मिस्टर महांती की टिम्बर कंपनी है। अपनी कंपनी को 'झापा-झिलमिलिया' और 'वनखंडी' का ठेका मिल जाए वे इस कोशिश में हैं। ठेका देना, न देना जनरल बहादुर के हाथ में है। उनका ठेका देने की एक शर्त है जैसे उनके दलाल मित्र आनंद ने उन्हें बताया। उसे हम रेणु के शब्दों में ही देखें- ''शराब में भारतीय 'रम' और औरतों में साँवली, मोटी। ब्लेक एण्ड व्हाइट, व्हाइट हार्स, डिम्पल, हेग, ओल्ड स्मग्लर- कुछ नहीं पीता नरबहादुर। देवदुर्लभ इन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की शराबों को वह 'रद्दी ड्रिंक' कहता है। बंगाल, मिथिला और काश्मीर की सुंदरता को देखकर वह 'ठण्डा' हो जाता है। उसे साँवली औरत चाहिए। लड़की नहीं औरत।'[15] ये कथन ठेका मिलने की सच्चाई को बता रहे हैं। एक जरूरत पूरी की जाने पर ठेके की

उनके मानस मे उभर जाती है। कलंक मुक्ति लघु उपन्यास है किंतु इसका कथानक विस्तृत है। 'वर्किंग-विमेन्स' होस्टल पर कथा केंद्रित होने के कारण मुख्य पात्र स्त्री ही हैं। मुख्य रूप से देखा जाए तो इस उपन्यास के दो स्त्री मुख्य पात्र हैं- बेला गुप्त तथा श्रीमती आनंद। बेला गुप्त वर्किंग-विमेन्स की सुपरिडेण्ट है, साथ ही कई संस्थाओं की 'केयर टेकर' भी है। श्रीमती आनंद अर्थात ज्योत्स्ना या ज्योति तीनों नाम एक ही पात्र के हैं। श्रीमती आनंद, मिस्टर आनंद की पत्नी है। श्रीमती आनंद विमेन्स वेलफेयर बोर्ड की ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। स्वभाव से गुस्सैल और चिड़चिड़ी है। उनका परिचय इन पंक्तियों से व्यक्त हो जाता है। रेणु लिखते हैं- ''श्रीमती आनंद, प्राय: सभी भाषाओं के एकाध अश्लील कहावत, अश्लील शब्द और अश्लील आशय के वाक्य जानती है और अवसर देख कर उसका प्रयोग भी करती है। यों भी, तनिक वल्गर बोले बिना उसके मुँह में लज्जत ही नहीं आती है।'[13] वे गर्ल्स होस्टल की लड़कियों को अपने हिसाब से काम लेना चाहती हैं। अपने घर कोई पार्टी हो तो नाच-गान के लिए हॉस्टल से लड़कियाँ बुलवाना, पति के मित्रों के सामने उनके नाच-गान की प्रस्तुति करवाना उनके लिए बहुत सामान्य बात है। एक शाम जब श्रीमती आनंद की कोठी पर एक छोटी-सी पार्टी थी, तब होस्टल से लड़कियों को लोकगीत गाने के बहाने बुलवाया गया। बेला गुप्त होस्टल वार्डन ने लड़कियों को नहीं भेजा। अपनी इज्जत को बचाते हुए मिस्टर आनंद ने अपने मित्रों से कहा उनकी पत्नी भी अच्छा गाती है। ''मिस्टर आनंद ने अपनी गंजी खोपड़ी पर एक बार हाथ फेर लिया। फिर, इधर-उधर देखकर उसने सूचना दी आप लोगों को शायद यह नहीं मालूम कि ज्योति खुद बढ़िया लोकगीत गा लेती है।'[14]

मिस्टर आनंद अपनी पत्नी को अपने दोस्तों जो कि ऑडिट करने आए हैं उन पर अपना प्रभाव दिखाने के लिए उपयोग करते हैं। श्रीमती आनंद पहले श्रीमती महांती थी। मिस्टर महांती की टिम्बर कंपनी है। अपनी कंपनी को 'झापा-झिलमिलिया' और 'वनखंडी' का ठेका मिल जाए वे इस कोशिश में हैं। ठेका देना, न देना जनरल बहादुर के हाथ में है। उनका ठेका देने की एक शर्त है जैसे उनके दलाल मित्र आनंद ने उन्हें बताया। उसे हम रेणु के शब्दों में ही देखें- ''शराब में भारतीय 'रम' और औरतों में साँवली, मोटी। ब्लेक एण्ड व्हाइट, व्हाइट हार्स, डिम्पल, हेग, ओल्ड स्मग्लर- कुछ नहीं पीता नरबहादुर। देवदुर्लभ इन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की शराबों को वह 'रद्दी ड्रिंक' कहता है। बंगाल, मिथिला और काश्मीर की सुंदरता को देखकर वह 'ठण्डा' हो जाता है। उसे साँवली औरत चाहिए। लड़की नहीं औरत।'[15] ये कथन ठेका मिलने की सच्चाई को बता रहे हैं। एक जरूरत पूरी की जाने पर ठेके की

बाकी किसी प्रक्रिया की सिर्फ़ औपचारिकता करनी है। ठेका देने और लेने वाले दोनों ही अपने फायदे के लिए किसी भी सीमा तक गिरने को तैयार हैं। मिस्टर महांती अपने दलाल मित्र मिस्टर आनंद के प्रस्ताव को सुन थोड़ा ठिठके। वे सोच रहे अपनी पत्नी ज्योति से वे यह सब कैसे कहेंगे। दूसरी ओर आनंद सोच रहा है कि महांती अपनी पत्नी को जानता ही कितना है।

श्रीमती महांती, पति के मित्र आनंद के साथ मिलकर दि फायरवुड-सप्लायर्स नामक कंपनी खड़ी कर चुकी है। यह वही श्रीमती महांती है जो महापात्र को छोडकर महांती के साथ आ गई थी। ऐसी ज्योति को आनंद कैसे नहीं जानता। किंतु पति के कहने पर कि चार लाख का मुनाफा है ज्योति डार्लिंग, तब ज्योति को लगता है, उसका पति उसे वेश्या समझ रहा है वह कहती है- ''गलत नहीं, मैंने ठीक ही समझा है तुमको। कहाँ है आनंद? उसी के पास जाना है न, नरबहादुर के कैम्प में? ठीक है, मैं तुम्हारा टेण्डर मंजूर करवाने जा रही हूँ। बनखण्डी और झापा-झिलमिलिया के जंगलों के ठेके चार लाख का मुनाफा चाहिए तुम्हें?'[७]

रेणु इस उपन्यास में ऊपर से संभ्रांत दिखने वाले समाज की एक-एक परत को उघाड़ते चलते हैं। श्रीमती आनंद के माध्यम से समाज में फैली चरित्रहीनता को शब्द देते हैं। आज हम देखते हैं कि सरकारी-गैरसरकारी कामों में रसूख, पहुँच और रिश्वत की कितनी अहमियत है। बिना लेन-देन के कोई भी काम नहीं हो पाता। श्रीमती महांती की कंपनी को तो ठेका नहीं मिला लेकिन दि फायरवुड-सप्लायर्स को ठेका मिल गया। दो वर्ष ठेके के काम करने के बाद 'राणाशाही' के खिलाफ क्रांति हुई तो ज्योति अपना और अपने पति का सारा कारोबार समेटकर सोम सुंदर आनंद के साथ कानपुर आ गई। तभी से लोग इन्हें श्रीमती आनंद के रूप में जानते हैं।

मिस्टर आनंद ने पाँच वर्षों में 'उत्तराचंल ट्रांसपोर्ट सर्विस' शुरु कर अपने पैर जमा लिए। अपने पुराने अफसरों के रिश्तों को भुनाते हुए समाज के प्रतिष्ठित लोगों के बीच मिस्टर आनंद ने जगह बना ली। अतः जब उनके घर में पार्टी हो तो 'विमेन्स वर्किंग होस्टल' से लड़कियों को बुलाया जाना कोई अचरज की बात नहीं। मिस्टर आनंद कारोबार नहीं अवैध व्यापार के सिलसिले में काठमाण्डू गए हैं। मिस्टर आनंद दो सप्ताह से वहीं हैं। 'वह पार्टी से 'नेपाली-रक्सी' और 'कांछी' का पूरा हिसाब करके लेगा' यह बात बागे को बहुत अच्छी तरह से पता है इसलिए वह श्रीमती आनंद को आज उनके ही घर में खास दावत दे रहा है ताकि अपने सारे गैरकानूनी काम करवा सके। बागे आज अपने साथ महँगू की दूकान का सींककबाब और

वैट-सिक्सटी नाइन साथ लाया है। वह ज्योति को, ज्योति के बारे में शायद सब जानता है।

मि. बागे, मिस्टर आनंद के घर की पार्टी में ज्योति से मिला था। यह वही शक्स है जो ज्योति के बिल्कुल पास मोढ़े पर बैठा था लोकगीत सुनने के बहाने से। उस दिन से ही बागे ने ज्योति से अपने व्यावसायिक फायदे के लिए साँठ-गाँठ की सोच ली थी। उसने जब मिस्टर आनंद से कहा था कि व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए क्या और कैसे करना है। तभी मिस्टर आनंद ने कह दिया था- 'मुझे एतराज नहीं तुम ज्योति को बोलो।' तब से ही मिस्टर बागे श्रीमती आनंद को पैसों के लालच के साथ-साथ खुद का भी लालच दे रहा था। बागे जानता है कि ज्योति को वह युवा लगा था पहली नजर में इसीलिए बागे ज्योति के घर वैट-सिक्सटी नाइन के साथ आया।

फणीश्वरनाथ रेणु ने उपन्यास में कहीं-कहीं भाषा के ऐसे बिंब बनाए हैं कि पढ़ने के साथ ही मानस में पूरा चित्र उभर जाता है। श्रीमती आनंद शराब पीने से पहले कमरे में पर्दे लगा देती है और रेणु इस दृश्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं- ''श्रीमती आनंद उठकर पर्दों को सरका आयी। बाहर की रोशनी बुझ गयी। अंदर का नीला चाँद जला। मिस्टर आनंद की बड़ी तस्वीर में माला लटक रही है। तस्वीर के पास दीवार पर एक छिपकली दौड़कर पतंगों को पकड़ रही है।''[7] यहाँ 'तस्वीर पर माला का लटकना' और 'छिपकली का पतंगे को पकड़ना' लेखक का शब्दों का चयन बहुत विशेष है। शायद वे यह कहना चाह रहे ज्योति फिर अपने स्वभावानुसार आज मिस्टर आनंद के साथ भी धोखा कर रही। वह अपने आप को बागे के हवाले कर देती और चाहती है कि श्रीमती बागे हो जाए। श्रीमती महापात्र-श्रीमती महांती-श्रीमती आनंद- और अब श्रीमती बागे।

श्रीमती आनंद के चरित्र का रेणु ने जो वर्णन किया है, वह दुष्टता और नीचता का मिश्रण है। श्यामसुंदर दास ने उपन्यास में पात्रों की चर्चा करते हुए जो बात कही है, वह श्रीमती आनंद के चरित्र के लिए सटीक लगती है। वे कहते हैं- ''दुष्टता और नीचता आदि का एक ही स्थान में कोई ऐसा चित्र खींचा जा सकता है जिस पर असंभव होने का तो दोष न लग सकता हो, पर फिर भी जो जीवन की साधारण वास्तविकताओं से बहुत दूर जा पड़ता हो।''[8] श्रीमती आनंद का चरित्र दुर्लभ तो नहीं पर आम भी नहीं है। एक के बाद एक पुरुष को वह धन और अतृप्त काम-वासना के लिए छोड़ती चली जाती है। अब वह बागे से अपनी काम-वासना को पूरा करना चाहती है। वह बागे के बहुत करीब आ जाती है और बागे से कहती है- ''मुझे उस

बुड्ढे के चुंगल से छुड़ाकर अपना क्यों नहीं बना लेते बागे? एकदम अपना... एकदम अपना।'[9] श्रीमती आनंद जो स्वयं अपनी इच्छा से आनंद के साथ चली आई श्री महांती को छोड़कर उसे अब आनंद बुड्ढा लग रहा। चरित्र की दृष्टि से ज्योति कितना और किस स्तर तक गिरी है ये उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है। जो स्त्री स्वयं चरित्रहीन है, उसे सभी दूसरी स्त्रियाँ भी चरित्रहीन ही दिखाई देती हैं। यही कारण है कि 'वर्किंग विमेन्स होस्टल' में रहने वाली हर स्त्री और लड़कियों को वह ऐसा ही समझती है। मिस बेला ने जब से होस्टल संभाला है, श्रीमती आनंद को तब से ही वह खटक रही है। उन्हें हमेशा ऐसा लगता है कि बेला सती-सावित्री बनने का ढोंग करती है। उसका ये मानना है कि बेला गुप्त कोई दूध की धुली नहीं है। बोर्ड के अधिकांश सदस्य जहाँ बेला को अच्छी संगठन करने वाली या व्यवस्थापिका मानते हैं, वहीं श्रीमती आनंद की सोच बेला के प्रति कितनी छिछली है- ''इन भूखे और खपे हुए बूढ़ों को क्या मालूम कि उनकी बेला दूध की धोई नहीं- न जाने कितनों के साथ सोयी है। हुँ ह! कुमारी, बेला कुमारी!! कुमारी हो या बेवा, पुरुष के साथ वह जरूर सोयी है। श्रीमती आनंद की आँखें इस मामले में धोखा नहीं खा सकतीं।''[10]

मिस बेला अपने पूरे मनोयोग से पूरे नियम-कायदे से होस्टल संभाल रही है। वह स्वयं भी होस्टल में नियम से ही रहती है। न तो वह देर रात तक शहर में घूमती है, न ही मिल्क-सेंटर के चूल्हे पर अपना खाना बनाती है। श्रीमती आनंद को कोई ऐसा बिंदु नहीं मिलता जिससे वे बेला को हटा सके। मिस बेला- बेला गुप्त इस उपन्यास की दूसरी मुख्य पात्र है। बेला किशनगंज गाँव इस्लामपुर स्कूल के व्यायाम-शिक्षक की पुत्री है। बेला पढ़ने-लिखने में ही नहीं खेल-कूद में भी बहुत सक्रिय रही। बेला लाठी, भाला, तीर, तलवार चलाने से लेकर महानदी में तैरने तक की प्रतियोगिताओं में हमेशा पहले नंबर पर आती रही। बेला हर वर्ष स्कूल के वार्षिकोत्सव में कोई नया करतब दिखाती। वह दुर्गापूजा के मेले में गाँव की लड़कियों को लेकर स्वयंसेविका दल बनाती है। बेला जब भी क्रांतिकारियों की कहानियाँ सुनती, उसकी देह बार-बार सिहर जाती। बेला को शहीदों की कहानियाँ, जलियाँवाला बाग की घटना आदि बहुत प्रभावित करती है। जब भी आर्यसमाजी कीर्तन में कोई देशभक्ति गाया जाता बेला की आँखों के आगे लहरें आने लगती। उसकी मुट्ठियाँ तन जाती। बेला के पिता का प्रिय छात्र बाँकेबिहारी जो काशी में पढ़ता था, वह जब भी गाँव आता बेला को दर्जनों क्रांतिकारी कहानियाँ सुनाता। कई किताबें बेला के लिए लाता और नए गीत हारमोनियम पर बजाकर बेला को सुनाता। बेला समझती रही बाँके भैया क्रांतिकारी पार्टी में है। यही बाँके भैया एक बार अपनी क्रांतिकारी-पार्टी में महिला-कार्यकर्ता की

सख्त जरूरत है, यह कह कर बेला को उसके घर से भगा ले गए। कानपुर में क्रांतिकारी-नेता 'भाईजी' से मिलना हुआ जिसकी दर्जनों कहानियाँ बेला, बाँके से सुन चुकी थी। बेला को देख वे बोले- ''स्वतंत्र भारत में सबसे पहले तुम्हारी आरती उतारी जाएगी।''[1]

बेला जाने क्या-क्या समझ रही थी, वह देशभक्ति के बहकावे में जाने कहाँ आ फँसी। सबसे पहले बाँके भैया ने ही अपनी देह की भूख मिटाई यह कहकर कि पाप-पुण्य क्या है। देश के लिए जो भी किया जाए वह पुण्य ही है। देश को स्वतंत्र करना ही सबसे बड़ा पुण्य है। जैसे भूख लगती है वैसे ही देह की भूख है। बाँके ने अपनी भूख मिटाई और तो और जिससे पार्टी के लिए 'आर्म्स' खरीदता था उस सरफराज खाँ को भी भूख मिटाने की अनुमति दी। बाँके ने बेला से कहा- 'पार्टी का काम जिससे बिगड़े नहीं- हमें इसके लिए सब कुछ सहना होगा।' बेला क्या समझ कर बाँके के साथ आई और क्या हुआ उसके साथ। रेणु ने बेला के माध्यम से उन सभी युवा होती लड़कियों की स्थितियों का वर्णन किया है। जवान होती लड़कियाँ किसी की बातों में बहक जाती हैं और घर छोड़कर उनके पीछे चली जाती है। अधिकांश लड़कियों का हाल बेला जैसा ही होता है।

बाँके के चंगुल से निकल बेला बनारस की गलियों और काल-कोठरियों से निकलकर कलकत्ता के मातृ-कल्याण संघ में पहुँचती है। कलकत्ता से बाँकीपुर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनिंग करती है। दो ही वर्षों में बेला गुप्त ने यहाँ अपनी जगह बना ली। अपनी सेवाभावी प्रकृति से बेला हर वार्ड के मरीजों व डॉक्टरों की चहेती हो गई। बेला पिछला सब भूल यहाँ नया जीवन शुरू करती है। यहाँ भी देशभक्त रमाकांत के लिए उसका दिल बैचेन होने लगता है लेकिन रमाकांत असली क्रांतिकारी था, उसे कोई बंधन नहीं चाहिए था। उसे भारत की स्वतंत्रता चाहिए थी। उसके लिए वह प्रिजनर वार्ड से भागा और मारा गया। बेला जिस दुकान से रामायण की किताब रमाकांत के लिए लाई थी, उसी में उसके भागने की योजना थी। बेला को पुलिस पर शक है किंतु बेला इस योजना के बारे में कुछ नहीं जानती। बूढ़ी मैट्रन मिस कुरियन ने फिर बेला को क्वार्टर में नहीं रहने दिया। बेला के साथ नर्सेस क्वार्टर चार और लड़कियों ने भी छोड़ा- युथिका, फातिमा, सरस्वती देवी और आयसा।

मिसेज रमला बनर्जी ने बेला को डेढ सौ रूपये मासिक पारिश्रमिक पर वर्किंग-विमेन्स बोर्ड फिल्ड-आर्गेनाइजर का काम दिलाया। तब से बेला यहीं है। बाँकीपुर की समाज-सेवी संस्थाओं में विमेन्स वेलफेयर बोर्ड की बहुत प्रतिष्ठा है।

इसी बोर्ड के तत्वावधान में वर्किंग-विमेन्स होस्टल चलाया जा रहा हैं। होस्टल के साथ ही मेटरनिटी सेंटर, शिल्प-केंद्र और मिल्क सेण्टर भी संचालित होते हैं। मिस बेला गुप्त इन सभी संस्थाओं की 'केयर टेकर' है। मिस बेला बहुत ईमानदारी से काम कर रही है। श्रीमती आनंद द्वारा होस्टल की लड़कियों को गाने-बजाने के लिए घर बुलाना उसे ठीक नहीं लगता। होस्टल में बार-बार किसी पुरुष का आना भी नहीं जमता जो वास्तव में नियम विरुद्ध है। बेला की कर्तव्यनिष्ठता, उसकी ईमानदारी ही शायद श्रीमती आनंद को चुभती है, खटकती है। किसी भी भ्रष्ट व्यक्ति को ईमानदार व्यक्ति ठीक नहीं लगता। वह हमेशा बेला को नीचा दिखाने का प्रयास करती है। क्लर्क सुखमय घोष को कहती भी है कि- 'बेला गुप्त का प्रकट कर के रहेगी।' मिस्टर बागे के साथ मिलकर वह बेला को फँसाने का काम करती है। होस्टल में स्टाक की गड़बड़ी, चोरी और दूसरे अभियोगों द्वारा बेला को फँसाया जाता है। मिस बेला गुप्त गिरफ्तार हुई। अगले दिन स्थानीय समाचार पत्रों में सनसनीखेज खबरें छपीं। सब सोच रहे बेला कचहरी में लंबे-चौड़े बयान देगी। इतने सालों में जो उसने अपना नाम कमाया है जिस समाज के प्रतिष्ठित लोगों में जगह बनाई है उनका उपयोग करेगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। जब मजिस्ट्रेट ने पूछा- कसूर किया, बेला ने जवाब दिया- ''पहले सिर हिलाकर, फिर स्पष्ट शब्दों में स्वीकार कर लिया- जी हाँ मैंने कसूर किया। सभी अभियोग सच है।''[12]

इस आधार पर बेला और उसकी चपरासी मुनिया की बेटी रामरति को गिरफ्तार कर लिया गया। होस्टल की तलाशी ली गई, बेला के बैंक खाते को देखा गया। बेला के खाते में साढ़े-पंद्रह रूपये जमा मिले। तब इतना पैसा, इतनी आमदनी कहाँ गयी खोजबीन जारी है। रेणु ने बेला के चरित्र को ऐसा क्यों गढ़ा, क्यों उनकी प्रधान नायिका ने अपने ऊपर लगे झूठे आरोप स्वीकार कर लिए। स्वयं बेला के अनुसार एक युग से उसके मन में 'पाप-बोध' पल रहा था। यह सजा भोग लेने पर लगेगा गंगा नहायी। पाप-बोध, अपने माँ-बाप को कहीं का न छोडने का। जब बाँकेबिहारी के साथ घर छोड़ दिया तब पिताजी कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहे और- ''बाबा ने आत्महत्या कर ली- महानदी में डूबकर! अध-पगली माँ न जाने कहाँ चली गयी।''[13] जिस दिन यह खबर मिली उस दिन बेला रो भी नहीं पायी थी। उसके कलेजे पर आँसू आज भी लदे हुए हैं। इसी 'पाप-बोध' से मुक्त होने के लिए बेला ने वे सारे अपराध स्वीकार किए जो उसने कभी किए ही नहीं। ''उपन्यासकार का प्राथमिक उद्देश्य जीवन्त स्पंदनशील पात्रों की सृष्टि करना है और उसमें 'रेणु' को अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई है।''[14] निर्मल वर्मा का ये कथन बेला गुप्त के चरित्र में साकार

दिखाई देता है। श्रीमती आनंद ने होस्टल के सभी नियम-कानून तोड़े किंतु वे साफ बच गईं। बागे ने उन्हें कह दिया था कि वो सब संभाल लेगा। बेला के चुपचाप अपना अपराध मान लेने से सब बच गए और यदि बेला अपराध न भी स्वीकारती तब भी वे सब तो बच ही जाते। सब तो मिले हुए हैं, सब होस्टल की लड़कियों के उपभोग में शामिल हैं। बेला की गिरफ्तारी के साथ उपन्यास समाप्त हो जाता है। लेकिन कई सवाल हैं जिनका जवाब पाठक को नहीं मिल पाता।

इस उपन्यास में बहुत सारे चरित्र हैं जो पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो पाते। 'वर्किंग विमेन्स होस्टल' का कथानक होने से कई महिला चरित्रों का प्रयोग उपन्यास में हुआ है। बेला गुप्त इस दुनिया के केंद्र में है। एक दृढ़ संकल्प किंतु विवश नारी, वहीं दूसरी ओर है अंजु-मंजु, रमला, गौरी जैसी लड़कियाँ और अनुभवी परिचायिका रामरति। इनके अलावा भी कई महिला पात्र हैं जैसे चंद्रमोहिनी, विभावती, रुक्मिणी और कुंती देवी। किंतु इन पात्रों को रेणु विस्तार नहीं दे पाए। उपन्यास के कथानक में एकरसता बनी रहती है एक-आध नाटकीय सूचनाओं के अतिरिक्त उपन्यास की कथा एक-सी चलती है। श्रीमती आनंद का अपने क्लर्क सुखमय घोष को छोटी मेम साहब बेला के विरुद्ध तैयार करना जरूर कथा में थोड़ी निरसता को तोड़ता है। अन्यथा कथानक मे एकरसता बनी रहती है। कलंक मुक्ति अर्थात् दीर्घतपा उपन्यास सुरेंद्र चौधरी के अनुसार- ''दीर्घतपा नारी की यह रोजमर्रा की जिंदगी हमारे सामने अनेक समस्याएँ उत्पन्न करती हैं, विचलनों की समस्या! यह विचलन तथाकथित आधुनिक जिंदगी का एक अनिवार्य अंग है।''[15] रेणु ने इस उपन्यास में नारी-जीवन के क्रूरतम अन्तर्विरोधों के संसार को बहुत सहजता के साथ रचा है। भारतीय समाज के नियंता वर्ग के दुहरे चरित्र और झूठे लोकतंत्र की विंडबनाओं का कच्चा-चिट्ठा है- कलंक मुक्ति उपन्यास। भारत यायावर कलंक मुक्ति उपन्यास के बारे में लिखते हैं- ''कलंक मुक्ति में आकर रेणु ने एक कठोर, विकृत और ह्रासोन्मुख समाज को बड़े ही बेलौस ढंग से अपनी कथा का आधार बनाया है।''[16]

इसमें कोई संदेह नहीं कि रेणु ने इस उपन्यास के माध्यम से आज के युग में फैले भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता और वीमेंस वेलफेयर की आड़ में होने वाले महिलाओं के यौन उत्पीड़न को ईमानदारी से अभिव्यक्त किया है। मिस बेला क्रांतिकारी साथी से धोखा और बलात्कार के बाद भी टूटती नहीं बल्कि जन-साधारण की सेवा, निर्बल और कमजोर युवतियों को सबल बनाने का प्रयास करती है। उन्हें शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयत्न करती है। बेला सहज जीवन जीना चाहती है, लेकिन

रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, होस्टल में वेश्याघर चलाने के इल्जामों ने उसे तोड़ दिया। उपन्यास के अंत में 'लेखक की स्वीकारोक्ति' शीर्षक में रेणु ने इस बात को स्वीकार किया है कि- ''दीपकली की तरह खिली बेला गुप्त अचानक बुझ गई।'' उसे पाँच वर्ष की सजा हुई, रामरति ने भी अपना कसूर स्वीकार किया वह भी बेला के साथ जेल गई। जेल से छूट कर उसी शहर में रही दोनों। रामरति का अजीत भाई से उपन्यास के प्रारंभ में यह कहना कि हमें 'कलंक मुक्त' कीजिए, अब पाठक को पूरी तरह समझ आ जाता है। फणीश्वरनाथ रेणु इस उपन्यास में अपने पिछले उपन्यासों से भिन्न कथानक चुनते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से आधुनिक जीवन की विडंबना को समाज के समक्ष लाते हैं।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद : *कुछ विचार*, 'उपन्यास' मलिक एण्ड कंपनी, जयपुर, 2015, पृष्ठ 30
2. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-3, कलंक मुक्ति, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 323
3. वही, पृष्ठ 338
4. वही, पृष्ठ 330
5. वही, पृष्ठ 356
6. वही, पृष्ठ 356
7. वही, पृष्ठ 383
8. श्यामसुंदर दास : *साहित्यालोचन*, गद्यकाव्य का विवेचन, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर 2009, पृष्ठ 169
9. भारत यायावर: *रेणु रचनावली*, खण्ड-3, कलंक मुक्ति, फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 406
10. वही, पृष्ठ 328-329
11. वही, पृष्ठ 352
12. वही, पृष्ठ 411
13. वही, पृष्ठ 353
14. निर्मल वर्मा : *रेणु समग्र : मानवीय दृष्टि*, समकालीन हिन्दी आलोचना, (सं. परमानंद श्रीवास्तव), साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ 216
15. सुरेन्द्र चौधरी : *भारतीय साहित्य के निर्माता : फणीश्वरनाथ रेणु*, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली 1987, पृष्ठ 104
16. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खण्ड-3, कलंक मुक्ति, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 10

❑❑❑